भारतीय संस्कृति, शिक्षा और दर्शन

विभिन्न संकलपनाएं

सम्पादक : डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

भारतीय संस्कृति, शिक्षा और दर्शन

विभिन्न संकल्पनाएँ

सम्पादक :

डॉ. दिनेश चंद्र शर्मा

Ph.D., D.Lit. (Sub.)

निदेशक, कॉम्पिटिशन प्लस ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन,
अजमेर

Books n Books

51/1509, आचमन, वेदविहार,
लोहाखान, अजमेर-305001

प्रकाशक :
पुष्पा शर्मा
Books n Books
51/1509, आचमन, वेदविहार,
लोहाखान, अजमेर-305001
ई-मेल : bnbajmer@gmail.com

संस्करण
प्रथम 2025

ISBN : 978 - 81 - 993854 - 7 - 4

मूल्य - 300/-

रचना -
भारतीय संस्कृति, शिक्षा और दर्शन विभिन्न संकल्पनाएँ

सम्पादक -
डॉ. दिनेश चंद्र शर्मा

आवरण -
श्रीनिवास प्रिन्टोग्राफिक्स, अजमेर

मुद्रक -
श्री श्याम ऑफसेट, किशनगढ़

षड्दर्शनों में शिक्षक का व्यक्तित्व

सुर्मिला यादव
सहायक आचार्य (शिक्षा विभाग)
हुकुमचन्द नोबेल इंस्टीट्यूट ऑफ साईंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

भारतीय संस्कृति में शिक्षक का स्थान अत्यन्त ऊँचा और पूज्य माना गया है। गुरु ही वह आधार है जिसके माध्यम से शिष्य अज्ञान से ज्ञान की ओर, असत्य से सत्य की ओर और मृत्यु से अमृत की ओर अग्रसर होता है। ऋग्वेद में गुरु को ब्रह्मा, विष्णु और महेश के समान ही आदर दिया गया है। उपनिषदों में कहा गया है कि केवल गुरु की शरण में जाकर ही ब्रह्मविद्या प्राप्त की जा सकती है। इसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए भारतीय दर्शन के षड्दर्शन— न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, पूर्वमीमांसा और उत्तरमीमांसा (वेदान्त) ने भी शिक्षक के व्यक्तित्व का विशद विवेचन किया है। प्रत्येक दर्शन की अपनी पद्धति और दृष्टि है, इसलिए प्रत्येक में गुरु अथवा शिक्षक का स्वरूप भिन्न-भिन्न रूप से प्रतिपादित किया गया है।

गुरु ही वह दीपक है जो शिष्य के अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करके ज्ञान की ज्योति प्रज्वलित करता है। हमारे शास्त्रों में कहा गया है—

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

अर्थात् गुरु ही ब्रह्मा है, गुरु ही विष्णु है और गुरु ही महेश्वर है। गुरु स्वयं साक्षात् परब्रह्म स्वरूप है। यही कारण है कि भारतीय परम्परा में गुरु और शिष्य का संबंध केवल ज्ञानदाता और ज्ञानग्राही का संबंध नहीं है, बल्कि यह एक गहरी आध्यात्मिक और नैतिक बंधन से जुड़ा हुआ है।

शिक्षक का व्यक्तित्व भारतीय शिक्षा-दर्शन में अत्यन्त व्यापक और बहुआयामी रहा है। वह केवल शाब्दिक ज्ञान नहीं देता, बल्कि जीवन को जीने की दिशा, नैतिकता, आचार और संस्कार प्रदान करता है। यही कारण है कि भारतीय दर्शन की सभी शाखाओं—न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, पूवर्ज्मीमांसा और उत्तरमीमांसा—में गुरु के महत्व को अत्यधिक स्वीकार किया गया है।

षड्दर्शन भारतीय दार्शनिक परम्परा के आधारस्तंभ हैं। ये सभी एक-दूसरे से भिन्न होकर भी एक ही परम लक्ष्य, मोक्ष, की प्राप्ति की ओर अग्रसर हैं। मोक्ष प्राप्ति

का साधन है—सत्य का ज्ञान। और यह सत्य का ज्ञान गुरु के द्वारा ही पूणज़्रूपेण प्राप्त हो सकता है। इसलिए प्रत्येक दर्शन ने अपनी-अपनी पद्धति के अनुसार शिक्षक की भूमिका और उसके व्यक्तित्व का विवेचन किया है।

न्याय दर्शन में शिक्षक का व्यक्तित्व

न्याय दर्शन के प्रवर्तक महर्षि गौतम माने जाते हैं। उनके द्वारा रचित 'न्यायसूत्र' भारतीय तर्कशास्त्र का आधारभूत ग्रंथ है। न्याय का मुख्य उद्देश्य है—

तत्त्वज्ञानान्नि:श्रेयससिद्धि:। अर्थात् सत्य-तत्त्व का ज्ञान प्राप्त कर आत्मा को दु:खों से मुक्त करना।

न्याय दर्शन में ज्ञान प्राप्ति के चार साधन बताए गए हैं—प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द। इनमें से 'शब्द' प्रमाण के अंतर्गत गुरु की भूमिका प्रमुख रूप से सामने आती है।

गौतम ने कहा है—'आप्तोपदेश: शब्द:।' अर्थात् आप्त पुरुष का उपदेश ही शब्द प्रमाण है। यहाँ 'आप्त' शब्द का अर्थ है— ऐसा पुरुष जो सत्यवादी हो, जिसका ज्ञान प्रमाणिक हो और जिसका उद्देश्य केवल शिष्य का हित करना हो।

वात्स्यायन ने न्यायभाष्य में कहा है कि गुरु का वचन 'अवितथ' अर्थात् असत्य से रहित और 'हितकर' होना चाहिए। इस प्रकार न्याय दर्शन में शिक्षक का व्यक्तित्व सत्य, निष्पक्षता और प्रमाणिकता से युक्त है।

इस प्रकार न्याय दर्शन में शिक्षक को आप्त पुरुष माना गया है। उसका कथन स्वयं एक प्रमाण है। शिष्य को गुरु के वचनों पर विश्वास इसलिए करना चाहिए क्योंकि वे वचन असत्य और अहित से रहित होते हैं।

शिक्षक की विशेषताएँ

न्यायभाष्यकार वात्स्यायन और वाचस्पति मिश्र जैसे आचार्यों ने शिक्षक की निम्न विशेषताएँ बताई हैं—

* शिक्षक का वचन 'अवितथ' होना चाहिए अर्थात् उसमें असत्य का कोई अंश न हो।
* उसका उपदेश शिष्य के लिए हितकारी होना चाहिए।
* वह विषय के प्रति तत्त्वदर्शी और गम्भीर होना चाहिए।
* शिक्षक का व्यक्तित्व शिष्य के लिए प्रमाणिकता और विश्वास का केन्द्र होना चाहिए।

शिक्षक और शिष्य का संबंध

न्याय दर्शन में शिष्य और शिक्षक का संबंध एक प्रकार का विश्वास और श्रद्धा पर आधारित है। शिष्य स्वयं सभी तत्त्वों को प्रत्यक्ष या अनुमान से नहीं जान सकता।

उसे कई बार ऐसे विषय मिलते हैं जो केवल शब्द प्रमाण से ही जाने जा सकते हैं। इस स्थिति में शिक्षक ही मार्गदर्शक बनकर उसे सत्य तक पहुँचाता है।

शिक्षक का नैतिक व्यक्तित्व

न्याय दर्शन केवल तार्किक विचार पर ही नहीं, बल्कि नैतिकता पर भी बल देता है। एक शिक्षक तभी आप्तपुरुष हो सकता है जब वह सत्यवादी, निष्पक्ष और निस्वार्थी हो। यदि शिक्षक के वचनों में स्वार्थ या असत्य का लेश भी हो, तो वह आप्त नहीं कहलाएगा।

इस प्रकार न्याय दर्शन में शिक्षक का व्यक्तित्व आदर्श, निष्पक्ष, सत्यवादी और ज्ञानपूर्ण है। वह शिष्य का केवल बौद्धिक विकास नहीं करता, बल्कि उसे तर्क और प्रमाणों की सहायता से सत्य और मोक्ष के मार्ग की ओर ले जाता है।

वैशेषिक दर्शन में शिक्षक का व्यक्तित्व

वैशेषिक दर्शन के प्रवर्तक महर्षि कणाद माने जाते हैं। यह दर्शन पदार्थों के वास्तविक स्वरूप और उनके गुणों के विवेचन पर आधारित है। वैशेषिक दर्शन में भी ज्ञान के साधन प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द माने गए हैं। वैशेषिक दर्शन के अनुसार, संसार में सात प्रकार के पदार्थ हैं—द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय और अभाव। इनका यथार्थ बोध तभी संभव है जब शिष्य के पास सत्य ज्ञान और सही मार्गदर्शन हो। यही कारण है कि वैशेषिक दर्शन में शिक्षक का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

शिक्षक का ज्ञानात्मक व्यक्तित्व

वैशेषिक दर्शन में शिक्षक वह है जो केवल ग्रंथों का पाठक नहीं होता, बल्कि सत्य और तत्त्व का विवेचन करने वाला तर्कशील मार्गदर्शक होता है। कणाद ने यह प्रतिपादित किया कि प्रत्येक वस्तु के गुण और कर्म का बोध केवल प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द प्रमाण के माध्यम से ही संभव है।

इस दृष्टि से शिक्षक का ज्ञान निम्नलिखित रूपों में प्रकट होता है—

वस्तुओं का सूक्ष्म विश्लेषण :- प्रत्येक पदार्थ, उसके गुण और कर्म का शास्त्रीय और तार्किक विवेचन करना।

तर्क और अनुभव का संतुलन :- केवल ग्रंथों पर निर्भर नहीं रहकर वास्तविक अनुभव और प्रत्यक्ष प्रमाण से ज्ञान प्रस्तुत करना।

शिष्य के स्तरानुसार मार्गदर्शन :- शिष्य की समझ के अनुसार ज्ञान को सरल और गहन रूप में स्पष्ट करना।

शिक्षक की नैतिक और वैचारिक विशेषताएँ

वैशेषिक शिक्षक का व्यक्तित्व केवल ज्ञान तक सीमित नहीं है, वह नैतिक और वैचारिक रूप से भी आदर्श होना चाहिए। इसके मुख्य गुण हैं—

* **तार्किक विवेकशीलता** :- वस्तु और उसके गुण के बीच के अंतर को स्पष्ट रूप से समझाना।

* **निष्पक्षता और सत्यनिष्ठा** :- तर्क और प्रमाणों में कभी भी पक्षपात या मिथ्या का समावेश न हो।

* **धैर्य और संयम** :- शिष्य के प्रश्नों और संशयों का धैर्यपूर्वक समाधान करना।

* **आत्मसाक्षात्कार** :- शिक्षक स्वयं अपने जीवन में शास्त्रों के तत्त्वों का अनुभव करता हो।

शिक्षक और शिष्य का संबंध

वैशेषिक दर्शन में गुरु-शिष्य संबंध का आधार ज्ञान का हस्तांतरण और तार्किक संवाद है। शिष्य को शिक्षा केवल सुनकर प्राप्त नहीं होती, बल्कि उसे अभ्यास, तर्क और अनुभव के माध्यम से समझाया जाता है। शिक्षक का कर्तव्य है कि वह शिष्य में विवेक, तर्कशीलता और वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण उत्पन्न करे।

गुरु का यह व्यक्तित्व शिष्य को वस्तुओं की वास्तविकता, उनके गुण और कर्म का विश्लेषण करने की क्षमता देता है। शिष्य इस मार्गदर्शन से केवल ग्रंथीय ज्ञान ही नहीं, बल्कि तर्क और प्रमाण के आधार पर वस्तु-सत्य को जान पाता है।

सांख्य दर्शन में शिक्षक का व्यक्तित्व

सांख्य दर्शन में गुरु का स्वरूप और भी गम्भीर है। सांख्य दर्शन द्रव्य और चेतना (पुरुष और प्रकृति) के द्वैतवाद पर आधारित है। कपिल मुनि का सांख्य यह प्रतिपादित करता है कि पुरुष और प्रकृति के भेद को जानने से ही मुक्ति सम्भव है। यहाँ शिक्षक शिष्य को यही विवेक सिखाता है कि आत्मा (पुरुष) शुद्ध, स्वतंत्र और चेतन है, जबकि प्रकृति जड़ और बन्धनकारी है। सांख्य का गुरु वैराग्य और विवेक का प्रेरक है। वह शिष्य को दु:ख का स्वरूप बताकर मुक्ति की ओर उन्मुख करता है। उसका जीवन संयम, निस्वार्थता और आत्मानुभव से परिपूर्ण होता है। कपिल मुनि द्वारा प्रतिपादित सांख्य का मुख्य उद्देश्य है—पुरुष को प्रकृति के बन्धनों से मुक्त करना।

सांख्य दर्शन में शिक्षक वह है जो पुरुष और प्रकृति के भेद को स्पष्ट रूप से जानता हो। शिष्य को यह समझा सके कि आत्मा (पुरुष) चेतन, स्वतंत्र और निर्विकार है, जबकि प्रकृति बन्धनकारी और जड़ है। शिष्य के अज्ञान को दूर करने और उसे आत्मज्ञान की ओर ले जाने में सक्षम हो।

शिक्षक की नैतिक और आध्यात्मिक विशेषताएँ

* **वैराग्य और विवेक का प्रेरक** - शिष्य में मोह और आसक्ति को कम करने में मार्गदर्शक।

*   **अनुभव और अभ्यासयुक्त** – केवल शास्त्रज्ञ नहीं, बल्कि स्वयं वैराग्य और संयम का पालन करने वाला।

*   सच्चरित्र और निस्वार्थ – शिष्य का कल्याण ही लक्ष्य।

शिक्षक और शिष्य का संबंध

सांख्य में गुरु-शिष्य का संबंध विवेक और तत्त्वज्ञान पर आधारित होता है। गुरु शिष्य को केवल बौद्धिक ज्ञान नहीं देता, बल्कि उसे वास्तविक जीवन में आत्मा और प्रकृति का भेद समझाता है।

योग दर्शन में शिक्षक का व्यक्तित्व

योग दशन, पतंजलि के योगसूत्र के अनुसार, चित्तवृत्ति निरोध पर आधारित है। इसका उद्देश्य है मानसिक शांति, समाधि और मोक्ष की प्राप्ति। चित्तवृत्ति को रोकने और समाधि की अवस्था तक पहुँचाने में शिष्य को एक अनुभवी गुरु की आवश्यकता होती है। इसलिए योग दर्शन का शिक्षक स्वयं साधना करने वाला, अनुशासित, तपस्वी और अनुभवसम्पन्न होता है। वह शिष्य को केवल सिद्धान्त नहीं बताता, बल्कि स्वयं अभ्यास कराकर ले जाता है। योग शिक्षक का व्यक्तित्व करुणा, धैर्य और आत्मनिष्ठा से ओत-प्रोत होता है। योग दर्शन में गुरु को 'योगाचार्य कहा गया है।

शिक्षक का ज्ञानात्मक व्यक्तित्व

योग शिक्षक वह है जो सिद्ध अनुभव वाला साधक हो। शिष्य को आसन, प्राणायाम, ध्यान और समाधि के मार्ग दिखा सके। ज्ञान केवल ग्रंथीय न होकर व्यावहारिक अभ्यास और अनुभव आधारित हो।

शिक्षक की नैतिक और आध्यात्मिक विशेषताएँ

*   अनुशासित और तपस्वी।

*   धैर्यशील और करुणामयी।

*   जीवन का आदर्श प्रस्तुत करने वाला, ताकि शिष्य उसका अनुसरण कर सके।

शिक्षक और शिष्य का संबंध

योग शिक्षक का संबंध शिष्य से मार्गदर्शन और प्रत्यक्ष अनुभव के माध्यम से है। शिष्य शिक्षक के साथ अभ्यास करता है और उसकी साधना का परिणाम प्रत्यक्ष देखता है।

पूर्वमीमांसा दर्शन में शिक्षक का व्यक्तित्व

पूर्वमीमांसा दर्शन का आधार वैदिक कर्मकाण्ड है। जैमिनि ने यहाँ यज्ञ और अनुष्ठान को प्रमुख साधन माना है। इस दृष्टि से शिक्षक वह है जो वैदिक मन्त्रों और ब्राह्मण ग्रंथों का गहरा ज्ञाता हो। वह यज्ञों के विधान, नियम और मर्यादाओं से पूर्णत: परिचित होता है। शिष्य को वह कर्मकाण्ड की विधि-व्यवस्था सिखाता है और उसे

अनुशासन एवं परम्परा का पालन करने के लिए प्रेरित करता है। यहाँ गुरु का व्यक्तित्व कर्मप्रधान, अनुशासनशील और शास्त्रज्ञ है।

इसका उद्देश्य है धार्मिक कर्मों और यज्ञों का सम्यक् पालन, जिससे समाज और व्यक्ति दोनों का कल्याण हो।

1. शिक्षक का ज्ञानात्मक व्यक्तित्व

* वैदिक मन्त्रों, ब्राह्मण ग्रंथों और कर्मकाण्ड का गहरा ज्ञाता।
* शिष्य को यज्ञ विधान, अनुष्ठान और कर्मकाण्ड के नियम समझाए।
* अनुशासन और परम्परा के पालन की शिक्षा देता है।

2. शिक्षक की नैतिक और आध्यात्मिक विशेषताएँ

* अनुशासनप्रिय और नियमपालक।
* शिष्यहितकारी और निष्पक्ष।
* कर्मकाण्ड की पद्धति में निपुण और आदर्श।

3. शिक्षक और शिष्य का संबंध

पूर्वमीमांसा में गुरु-शिष्य संबंध कर्मकाण्ड और अनुष्ठान के अभ्यास पर आधारित होता है। गुरु शिष्य को यथार्थ कर्मकाण्ड और वैदिक संस्कारों में मार्गदर्शन करता है।

उत्तरमीमांसा (वेदान्त) में शिक्षक का व्यक्तित्व

उत्तरमीमांसा अर्थात् वेदान्त में शिक्षक का स्वरूप और भी उदात्त है। वेदान्त का लक्ष्य है— ब्रह्म और आत्मा की एकता का बोध। यहाँ गुरु केवल शास्त्रज्ञ ही नहीं बल्कि ब्रह्मनिष्ठ महापुरुष होता है। शंकराचार्य ने कहा है कि गुरु वही है जिसने आत्मा और ब्रह्म का प्रत्यक्ष अनुभव किया हो और जो शिष्य के अज्ञान का नाश करके उसे आत्मसाक्षात्कार कराए। वेदान्त का शिक्षक त्यागी, करुणामयी, सत्यनिष्ठ और आत्मज्ञानी होता है। वह केवल ज्ञान नहीं देता, बल्कि शिष्य को ब्रह्मज्ञान की ऊँचाई तक पहुँचा देता है।

भारतीय दर्शन का शिखर उत्तरमीमांसा या वेदान्त दर्शन है। जहाँ पूर्वमीमांसा का केन्द्र कर्म है, वहीं उत्तरमीमांसा का केन्द्र ज्ञान है। यह वेद के उत्तर भाग, विशेषकर उपनिषदों पर आधारित होने के कारण वेदान्त कहलाता है।

वेदान्त का मूल वाक्य है— 'तत्त्वमसि' (तुम वही हो)। अर्थात् जीवात्मा और परमात्मा में कोई भिन्नता नहीं है। इस गूढ़ और अद्वितीय ज्ञान का संचार केवल वही शिक्षक कर सकता है, जिसने स्वयं इसका अनुभव किया हो। इसीलिए वेदान्त दर्शन में शिक्षक का व्यक्तित्व अत्यंत ऊँचे आदर्श के रूप में वर्णित है।

1. शिक्षक का ज्ञानात्मक स्वरूप

वेदान्त दर्शन में शिक्षक को केवल ग्रंथकार या प्रवचनकर्ता मानना पर्याप्त नहीं

है। यहाँ शिक्षक का अर्थ है—ब्रह्मविद्या में निपुण और अनुभवी मार्गदर्शक। शिक्षक उपनिषदों, ब्रह्मसूत्रों और गीता का गहन ज्ञाता होता है। वह केवल बौद्धिक व्याख्या नहीं करता, बल्कि शिष्य को आत्मसाक्षात्कार की दिशा में ले जाता है। शंकराचार्य ने गुरु के महत्व को समझाते हुए कहा है— 'शास्त्रज्ञानमपि स्वात्मानुभवेन विना निष्फलम्' अर्थात केवल शास्त्र का ज्ञान व्यर्थ है, जब तक उसका आत्मानुभव न हो।

इस प्रकार शिक्षक का ज्ञानात्मक स्वरूप शास्त्र और आत्मानुभव, दोनों के सम्मिलन से परिपूर्ण होता है।

2. शिक्षक की नैतिक विशेषताएँ

* वेदान्त में शिक्षक का व्यक्तित्व सत्य, करुणा और निस्वार्थ सेवा पर आधारित है।
* वह सत्यवादी होता है, क्योंकि असत्य का सहारा लेकर ब्रह्मविद्या का संचार संभव नहीं।
* उसमें करुणा होती है। शिष्य की अज्ञानता पर वह हँसता नहीं, बल्कि उसे धैर्यपूर्वक मार्ग दिखाता है।
* वह नि:स्वार्थी है। उसका लक्ष्य शिष्य से यश, मान या धन प्राप्त करना नहीं, बल्कि उसे ब्रह्मज्ञान तक पहुँचाना है।

उपनिषदों में गुरु का स्वरूप आप्तपुरुष के रूप में बताया गया है— ऐसा व्यक्ति जो सत्य का अनुभव कर चुका हो और दूसरों को उस अनुभव तक पहुँचा सके।

3. शिक्षक और शिष्य का संबंध

वेदान्त दर्शन में गुरु-शिष्य संबंध अत्यंत गहरा और आध्यात्मिक है। यह केवल ज्ञान का आदान-प्रदान नहीं, बल्कि आत्मा और ब्रह्म के बोध का साधन है।

श्रवण, मनन और निदिध्यासन - शिष्य गुरु के पास बैठकर पहले श्रवण करता है, फिर उस पर मनन करता है और अंत में ध्यान द्वारा उसे आत्मसात करता है। शिष्य के लिए गुरु के प्रति पूर्ण विश्वास और श्रद्धा आवश्यक है। गुरु शिष्य की क्षमता और पात्रता को देखकर ही उसे उपदेश देता है।

उपनिषदों में कहा गया है— 'आचार्यवान् पुरुषो वेद' अर्थात् केवल वही व्यक्ति ब्रह्मविद्या को जान सकता है, जिसके पास गुरु हो। इससे स्पष्ट है कि वेदान्त में शिक्षक के बिना मोक्ष की प्राप्ति संभव ही नहीं है।

4. शिक्षक का आध्यात्मिक आदर्श

वेदान्त दर्शन में शिक्षक का सर्वोच्च आदर्श है—आत्मा और ब्रह्म की एकता का प्रत्यक्ष अनुभव। वह स्वयं ब्रह्म में स्थित होता है। उसका जीवन शिष्य के लिए आदर्श होता है। वह शिष्य को आत्मज्ञान की ओर केवल शब्दों से नहीं, बल्कि अपने आचरण

से भी प्रेरित करता है।

शंकराचार्य ने गुरु को ईश्वर का ही प्रतिनिधि माना है। उन्होंने लिखा है— 'गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

यहाँ गुरु को ब्रह्म, विष्णु, महेश्वर और स्वयं परब्रह्म के रूप में वंदना की गई है।

5. शिक्षक का समाज के प्रति योगदान

वेदान्त का शिक्षक केवल व्यक्तिगत मुक्ति का मार्गदर्शक नहीं होता, बल्कि समाज को भी उच्चतर आदर्श प्रदान करता है। वह लोगों को बताता है कि सभी प्राणी ब्रह्म के अंश हैं, अतः सबमें समानता है। वह समाज को विवेक, वैराग्य, भक्ति और ज्ञान का मार्ग दिखाता है। उसका जीवन सामाजिक अन्याय और भेदभाव को मिटाने का उदाहरण होता है। इस प्रकार वेदान्त का शिक्षक केवल शिष्य ही नहीं, बल्कि पूरे समाज का पथ-प्रदर्शक होता है।

उत्तरमीमांसा या वेदान्त दर्शन में शिक्षक का व्यक्तित्व सत्य का साक्षात स्वरूप है। वह केवल ज्ञानदाता नहीं, बल्कि ब्रह्मज्ञान का मार्गदर्शक, आत्मानुभव का साधन और मोक्ष का द्वार है।

वेदान्त के अनुसार, शिक्षक का महत्व इतना अधिक है कि बिना गुरु के ब्रह्मज्ञान प्राप्त ही नहीं हो सकता। इसीलिए कहा गया है कि भारतीय संस्कृति में गुरु केवल शिक्षा का साधन नहीं, बल्कि मोक्ष और परमसत्य की ओर ले जाने वाला परम पथप्रदर्शक है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि षड्दर्शनों में शिक्षक का व्यक्तित्व विविध रूपों में प्रतिपादित हुआ है। न्याय में वह आप्त पुरुष है, वैशेषिक में तर्कशील यथार्थवादी मार्गदर्शक, सांख्य में विवेक और वैराग्य का प्रेरक, योग में अनुशासित साधक और योगाचार्य, पूर्वमीमांसा में वैदिक कर्मकाण्ड का ज्ञाता और अनुशासनकारी आचार्य, तथा वेदान्त में ब्रह्मज्ञानी, आत्मनिष्ठ और करुणामयी गुरु।

यद्यपि दृष्टिकोण भिन्न-भिन्न हैं, तथापि एक बात सभी दर्शनों में समान है— शिक्षक केवल ग्रंथों का पाठक नहीं है, वह स्वयं अनुभवी, सच्चरित्र, शिष्यहितकारी और जीवन के आदर्शों से युक्त होना चाहिए। उसका उद्देश्य केवल ज्ञान देना नहीं, बल्कि शिष्य को अन्तिम लक्ष्य अर्थात् मोक्ष की ओर ले जाना है। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान सर्वोच्च माना गया है।

❑❑❑